



ISSN Print: 2394-7500
 ISSN Online: 2394-5869
 Impact Factor: 5.2
 IJAR 2020; 6(3): 163-165
www.allresearchjournal.com
 Received: 15-01-2020
 Accepted: 18-02-2020

Vinod
 Research Scholar,
 Department of Defence and
 Strategic Studies M.D.U.
 Rohtak, Haryana, India

परमाणु तनाव के साए में दक्षिण एशिया

Vinod

भूमिका

दक्षिण एशिया एक अस्थिर क्षेत्र है यहाँ सैन्य क्षमता और परमाणु शक्ति को लेकर होड़ लगातार बढ़ रही है। विशेषज्ञों के अनुसार भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच परमाणु क्षमता में एक-दूसरे से आगे निकलने की दौड़ लगातार तेज होती जा रही है।

चीन भले ही तकनीकी रूप से दक्षिण एशिया का भाग नहीं है लेकिन उसकी सीमाएं भारत और पाकिस्तान दोनों से जुड़ी होने के कारण वह दोनों देशों के परमाणु कार्यक्रमों में वह अच्छी खासी रूची रखता है। विशेषज्ञों के अनुसार इन देशों के बीच ऐसी होड़ का परिणाम खतरनाक हो सकता है। इन देशों के आपसी अविश्वास और युद्ध के इतिहास को देखते हुए मामला और ज्यादा गंभीर होता जा रहा है। आर्थिक और राजनीतिक रूप से कमजोर होने के बावजूद पाकिस्तान हथियारों की दौड़ में पीछे रहने को तैयार नहीं है। माना जाता है कि पाकिस्तान दुनिया के उन देशों में है जिसके परमाणु हथियार भण्डारण में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है।

“हम घास खा लेंगे, यहां तक की भूखे भी रह लेंगे, लेकिन हम अपना परमाणु बम जरूर बनाएंगे, हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है।”

– Zulfikar Ali Bhutto

भारत को भी मजबूरन इस दौड़ का हिस्सा बनना पड़ा क्योंकि भारत की सुरक्षा नाभिकीय मुद्दे से जुड़ी है। भारत के पड़ोसी देशों के पास परमाणु हथियार है। भारत पाक सम्बन्धों को देखते हुए भारत को अपना परमाणु प्रसार कार्यक्रम बढ़ाना अनिवार्य हो गया है। 1947 से लेकर 1948, 1965, 1971 तथा 1999 पाकिस्तान लगातार भारत पर हमला करने की कोशिश करता रहा है। उरी हमला और पुलवामा इसके ताजा उदाहरण है। भारत हमेशा से ही शान्ति का पक्षधर रहा है लेकिन पड़ोसी देश पाकिस्तान के नापाक इरादे और पाक-चीन गढ़जोड़ भारत को परमाणु दौड़ में शामिल होने के लिए विवश कर रहे हैं जिसकी दक्षिण एशिया में लगातार परमाणु खतरा बढ़ता जा रहा है।

पृष्ठभूमि – परमाणु ताकत का इतिहास आशा और भय से भरा हुआ है जो हमेशा याद दिलाता है कि परमाणु ऊर्जा के अन्दर एक बहुत बुरी तथा बहुत अच्छी योग्यता छिपी हुई है। परमाणु शक्ति द्वारा जहां बहुत समस्याओं को सुलझाया गया वहीं दूसरी ओर उसने बहुत सी समस्याओं को जन्म भी दिया।

मार्टिन हेनरिक क्लैप्रोथ – यह एक जर्मन रसायनज्ञ थे जिन्होंने यूरेनियम, जिरकोनियम और सेरियम की खोज की और टाइटेनियम और टेल्यूरियम नाम दिया। उस समय यूरेनियम का एकमात्र उपयोग कांच और मिट्टी के पात्र को रंगना था। 1896 तक यूरेनियम के रेडियोधर्मी गुणों पर ध्यान नहीं दिया गया।

हेनरी बेकरेल – फ्रांस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेनरी बेकरेल ने अपनी खोज के पूर्ण महत्व का एहसास नहीं किया, लेकिन उनके एक छात्र मैरी क्यूरी ने अपने परिणामों की सही व्याख्या की और नई घटना के लिए रेडियोधर्मिता का नाम चुना। मैरी क्यूरी ने अपने पति के साथ काम करते हुए सन् 1896 में एक और नए तत्व, रेडियम की खोज की। क्यूरी को इस नए तत्व के एक ग्राम का एक अंश प्राप्त करने के लिए कई टन यूरेनियम अयस्क का उपयोग करना पड़ा। रेडियम को कैंसर के लिए एक चमत्कारिक इलाज माना जाता था।

रेडियम की मांग ने 1900 के दशक में यूरेनियम अयस्क के खनन में तेजी से विस्तार किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, बेल्जियम, कांगों और कनाडा में नई खोजे की गई थी।

Correspondence Author:
Vinod
 Research Scholar, Department
 of Defence and Strategic
 Studies M.D.U. Rohtak,
 Haryana, India

रेडियोएक्टिव पदार्थों के साथ क्यूरिक के पहले काम के बाद दुनिया भर के कई वैज्ञानिकों ने यूरेनियम का अध्ययन करना शुरू किया। इसके परमाणु रहस्यों की खोज करने की कोशिश की। 1939 में जर्मनी में ओटो हैन द्वारा पहला सिद्ध परमाणु विखण्डन किया गया था। इस समय तक दुनिया युद्ध के किनारे पर भी और सैन्य गोपनीयता ने जल्दी से परमाणु वैज्ञानिकों के काम को घेर लिया। एनरिको फर्मी के नेतृत्व में एक टीम ने रिएक्टर को महान् गोपनीयता से बनाया। इस रिएक्टर ने पहली बार परमाणु प्रतिक्रिया 1942 में हासिल की। अमेरिका को डर था कि जर्मनी पहला परमाणु हथियार विकसित करने वाला देश होगा, जिसने कई देशों के प्रमुख परमाणु वैज्ञानिकों कि एक टीम को संयुक्त किया। उनके काम को मैनहट्टन परियोजना के रूप में जाना गया जिसके परिणामस्वरूप जुलाई में न्यू मैक्सिको में ट्रिनिटी परीक्षण स्थल पर पहला परमाणु विस्फोट हुआ। एक महिने बाद दुनिया को परमाणु हथियारों की भारी विनाशक शक्ति के बारे में पता चला जब हिरोशिमा और नागाशाकी के जापानी शहर तबाह हो गए।

युद्ध समाप्त होने पर परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग को विकसित करने पर ध्यान दिया गया। परमाणु ऊर्जा का पहला व्यावहारिक उपयोग 1951 में हुआ, जब इडाहो फॉल्स में एक अमेरिकी अनुसंधान केन्द्र में एक प्रयोगिक परमाणु रिएक्टर से चार साधारण बल्ब जलाए थे। 1957 में अमेरिका का पहला परमाणु ऊर्जा संयंत्र शिपिंगपोर्ट, पेंसिल्वेनिया में चलाया गया। इसकी उत्पादन क्षमता 60 मेगावाट थी।

इस बीच कई देशों द्वारा रिएक्टर निर्माण कार्य जारी था। 1954 में दुनिया के पहले वाणिज्यिक रिएक्टर ने रूस के ओबानेस्क में बिजली उत्पादन किया। ब्रिटेन का कैल्डर हाल 1956 में शुरू हुआ और यह दुनिया का पहला औद्योगिक पैमाने का परमाणु ऊर्जा केन्द्र था। फ्रांसिसी परमाणु कार्यक्रम की युद्ध के बाद धीमी शुरुआत हुई थी। लेकिन 1956 में मार्कोउल में एक रिएक्टर के साथ अपनी बिजली उत्पन्न की। कनाडा और स्वीडन भी क्रमशः 1962 और 1964 में स्वतन्त्र रूप से परमाणु बिजली बनाने में सफल रहे।

1960 और 1970 के दशक के दौरान इन सभी देशों के परमाणु उद्योग तेजी से बढ़े। इटली द्वारा 1958 में प्रदान किए गए परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों के लिए पहले निर्यातक देश थे।

परमाणु हथियारों वाले देशों की सूची –

1. संयुक्त राज्य अमेरिका – पहला परीक्षण – 16 जुलाई 1945 (त्रिमूर्ति)
2. रूस – पहला परीक्षण – 29 अगस्त, 1949 (आर.डी.एक्स-1)
3. यूनाइटेड किंगडम – पहला परीक्षण – 3 अक्टूबर 1952 (तूफान)
4. फ्रांस – पहला परीक्षण – 13 फरवरी 1960 (जेरोबिस ब्ल्यू)
5. चीन – पहला परीक्षण – 19 अक्टूबर, 1964 (596)
6. भारत – पहला परीक्षण – 18 मई 1974 (स्माइलिंग बुद्ध)
7. पाकिस्तान – पहला परीक्षण – 28 मई 1998 (चगाई – आई)
8. इजराइल – पहला परीक्षण – 1960-1979
9. उत्तर कोरिया – पहला परीक्षण – 9 अक्टूबर, 2006

भारत-पाकिस्तान नाभिकीय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन :-

भारत और पाकिस्तान में पिछले दस वर्षों में परमाणु बमों की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है। हाल ही के वर्षों में पाकिस्तान ने भारत कि तुलना में अधिक परमाणु बम बनाए हैं। दुनिया में हथियारों की स्थिति और वैश्विक सुरक्षा का विश्लेषण करने वाले स्वीडन की संस्था "स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट" ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में यह बात कही है। इंस्टीट्यूट के परमाणु निरस्त्रीकरण, शस्त्र नियंत्रण और अप्रसार कार्यक्रम के निदेशक शेनन काइल ने बीबीसी संवाददाता को

बताया कि दुनिया में परमाणु हथियारों का कुल उत्पादन कम हो गया है। लेकिन दक्षिण एशिया में यह बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा "वर्ष 2009 में भारत के पास 60 से 70 परमाणु बम थे उस समय पाकिस्तान के पास 60 परमाणु बम थे। लेकिन दस वर्षों के दौरान दोनों देशों ने अपने परमाणु बमों की संख्या दोगुनी से अधिक कर ली है।"

शेनन वाइल ने कहा कि पाकिस्तान के पास अब भारत से अधिक परमाणु बम हैं। विभिन्न स्रोतों से मिली जानकारी के आधार पर यह कह सकते हैं कि भारत में अब 130 से 140 परमाणु बम हैं जबकि पाकिस्तान के पास 150 से 160 परमाणु बम हैं।

शेनन वाइल ने आगे कहा है कि वर्तमान समय में भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव अपने चरम पर है और यह परमाणु बमों की संख्या बढ़ने की ओर इशारा करता है।

भारत पाकिस्तान ने परमाणु हथियारों के कार्यक्रम को बजट में प्राथमिकता दी है लेकिन यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि सरकार इन कार्यक्रमों पर कितना खर्च कर रही है। यह एक बड़ा सरकारी कार्यक्रम है तथा इसके बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। परमाणु सुरक्षा और सुरक्षित रखे जाने के बारे के सवाल में दोनों सरकारें पूरी सुरक्षा का दावा करती हैं।

भारत पाकिस्तान सैन्य क्षमता

	भारत	पाकिस्तान
सैनिक	13.6 लाख	6.37 लाख
टैंक	4426	2182
युद्धपोत	295	197
लडाकू विमान	2185	1281
हैलीकॉप्टर	720	328
रक्षा-खर्च	41 खरब 23 अरब रुपये	7 खरब 81 अरब रुपये
वायु सेना	1,40,000	70,000
नौ सेना	67252	37700

भारत पाकिस्तान के बीच वर्तमान स्थिति :-

जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को बेअसर करने के फैसले के बाद पाकिस्तान कि और से युद्ध की चेतावनियां दी जा रही है तो भारत की ओर से भी कहा जा रहा है कि सेनाएं किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए मुस्तैद हैं। पाकिस्तान प्रधानमंत्री इमरान खान ने जब यह कहा कि पुलवामा जैसी कोई वारदात फिर हो और भारत यदि उसका जवाब दे तो स्वभाविक है पाकिस्तान भी उसका जवाब देगा और युद्ध की शुरुआत हो जाएगी। यह युद्ध कहां तक जाएगा इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। भारतीय थल सेना प्रमुख ने यहां तक बोल दिया था कि भारतीय सेना किसी भी स्थिति से निपटने को तैयार है। इसके साथ ही भारतीय वायुसेना प्रमुख ने भी कहा कि भारतीय वायुसेना हमेशा चौकस रहती हैं और वह किसी भी हमले का जवाब देने को तैयार है।

सवाल यह उठता है कि यदि वाकई युद्ध हुआ तो इसका परिणाम क्या होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय सेनाएं पाकिस्तान पर काफी भारी पड़ेगी लेकिन पाकिस्तान की परमाणु सम्पन्नता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष एवं सुझाव –

भारत और पाकिस्तान दोनों के पास परमाणु शक्ति होने के कारण दक्षिण एशिया पर परमाणु युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। हाल ही में अमेरिका कि एक स्टडी में दावा किया गया कि अगर भारत और पाकिस्तान के बीच जंग हुई तो इसके नतीजे बेहद खतरनाक हो सकते हैं। इतना ही नहीं यह पूरी दुनिया को जलवायु परिवर्तन से होने वाली आपदाओं की तरफ भी ले जा

सकता है। स्टडी में दावा किया गया कि यदि युद्ध हुआ तो 12.5 करोड़ लोग मारे जाएंगे। कश्मीर से 370 अनुच्छेद हटाने के बाद बौखलाया पाकिस्तान बार-बार परमाणु हमले की धमकी दे रहा है। इन धमकीयों से अजीज आकर भारत ने भी अपनी न्यूक्लियर पॉलिसी में बदलाव किया है।

अगर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ तो आग के कारण 0.79 किलोमीटर तक सब कुछ जलकर खाक हो जाएगा। एयर ब्लास्ट – 1 के बाद 3.21 किलोमीटर तक झटके महसूस होंगे। 10.5 किलोमीटर तक रेडिएशन फैलेगा। एयर ब्लास्ट – 2 में 14.2 किलोमीटर तक भर्मल रेडिएशन का असर होगा।

भारत हमेशा से ही शान्ति का पक्षधर रहा है लेकिन पाकिस्तान की गतिविधियों को देखते हुए भारत के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि भारत अपने परमाणु कार्यक्रम में वृद्धि करे ताकि भारतीय सेना का मनोबल बना रहे और पाकिस्तान द्वारा की जाने वाली किसी भी सैन्य कार्यवाही का जवाब दिया जा सके।

References

1. <https://www.reuters.com>. Fact box – India and Pakistan nuclear arsenals and strategies- Reuters.
2. <https://www.trtworld.com> – India and Pakistan: how much of a nuclear threat do they pose? Try world.
3. <https://timesofindia.com>. Indiatimes.com – Pakistan remains ahead in nuclear warheads but India confident of its.....
4. <https://www.aljazeera.com> India Vs Pakistan : Military strength and arsenal
5. <https://www.nationmaster.com>: India Vs Pakistan Military nuclear weapons stats compared Nation Master.
6. www.armscontrol.org : Nuclear weapons
7. theconversation.com: Nuclear war between India and Pakistan? An expert assesses the risk.
8. <https://journals.sagepub.com> – Nuclear weapons programmes of Indian and Pakistan: A comparative Assessment.
9. The History of Nuclear Energy ‘Nuclear Energy Vs Department of Energy.
10. Stephens, Mark – Three mile Island. First New York.
11. Mladjenovic, Milorad, The History of Early Nuclear Physics. Singapore
12. Nuclearisation in South Asia – R.K Khilnani
13. Nuclearisation in South Asia – B.M Jain
14. www.amarujala.com/ind.